

मनोज

कॉमिक्स  
विशेषांक

सेल्फ 14 मूल्य 16.00

# हवलदार बहादुर और नौ अजूब



एक  
कॉमिक्स  
विशेषांक 8 अंक  
मेनेट स्टोकर  
मुफ्त

# हवलदार बहादुर और नौ अजूबे

चित्रांकन  
वेदी  
कहानी  
विनय प्रभाकर



के सजावट सेठ रेखावन की  
सजावट कोठी में...



के सजावट बहादुर की अजीब  
चिन्म पड़ गया।



गो के दिल में झुलझुला  
प एच की जुबान  
ग ही गया।



नौ अजूबे कहते हैं 'हमें'!



मालो भुजाका सा हुआ बहादुर। सभी की  
और नौ अजूबे से फटी की फटी  
रह गई।

हे सजावन! आज  
मेरे सिर के बालों  
और दाढ़ी के लोहों  
की खोज नहीं।



तभी एक जे किया एक बेचकूताना खजाल -

क... क्या चाहते हो तुम ?



लो कर लो  
बार, असा सिवाये भी  
पूछने की बात है, हमें तुम  
साथ के रुपये और बार को  
चाहिए।

ओह मुझे तुम  
सबके बाल !  
है... है... है...!

हायर, मैं जर  
गई ! यह सूआ  
क्या हम औरतों  
को भी टक्की कर  
जाएगा !



मनो साधियो, हो जाओ बुरा !



जैसे ही जो अजुबे आगे बढ़े, कुछ दिनेर चुपक की आगे बढ़े !

ठहरो ! हमारे बीते हुए तुम इन  
लोगों को वहीं लूट सकते ! हम तुमहें  
देखा नहीं कर रहे हैं !

हां, हम ऐसा नहीं  
होने देंगे !



अबुले नटाक दिया

व हाथोले, नसा क्या कह  
रिख हैं मछि लोका ?



मनो तो  
जबो हैं इन  
लोगों की  
हड्डियां  
नवुराक सांगे  
हैं !

तो ठीक है बदर, देर किस बात की है !  
तो जाओ बुरा !



उत्तापित पल बाकरी सज्जित हो उठे।

आइडल

हाइलेड का एक बार ही थारो लंडा का खिलाफनी कर देखो।

खटाक कड़ाक



अरे हाट लीमी तो बड़ी जल्दी बेवोश हो जारो।



ओरे ओरे हो

242

आह!

माकटु की साँसों की बहबू को सेंगन नही कर सकते तूम।

ओह!



हे भाउजगो हम धुल कथा सेरा तो।

पेटल के आकार कोट में हथियारों का बजाजभा है।

जैसे वे!



फलाक

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

अह

उधर हथौद एकला अरने कलपराद कल के गुल हुआ था। अब तूम सबको एकला करेगा हथौद एकला।



!!!

कूटू



आ के वल बिजली की सी तेजी से चलने लगे हथौड़े एकदम के हाथ...



...आर लोहा तोले लगे लोहे।

मैं अपने बाल कैसे ही तुम्हें दे देता हूँ।



अजब मोटे, अजब तेरी बारी है।  
गुप्त पर अपना उरतया चलाने की शकूरत नहीं है भाई!



इधर नयकइया अपने हिस्साइल ने लोहाओं की खाद खाई किए था।



बेका... बेका... बेका... बेका... हैं तो कलंगा।

मैं भी तुम लोगों की हडिइयों को बेक कलंगा।



आई एम ए बेक औरर!

हउड आई एम ए ग्युनिकाय फाइटर!

तमैं कलंगइया मैं कलंगा कलंगा कलंगा ही कलंगा और इसी के साथ नयकइया के नाचने का बरतइल रही।



नाचई... नाचई...

नाचई... नाचई...

तुम्हारा



हमारे पास बहुत दूर, जल्दी से जीव तैयार करो। जो अजुबों को विषमता करने लगता है हमें।

न... नो अजुबे!



इन बीतानों को एकदम से जा रहे हैं। भगवान् जाने आज हम सही-सच्चाई वापस लाएंगे या नहीं।

पावलो की तरह और वे मत मारो। वे बहुत जोर से कहता है जल्दी करो।

यस... बस सर।

कुछ ही रक्तों बाद-



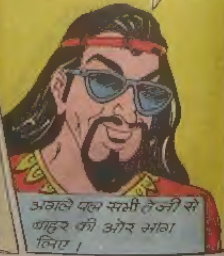
तो फिर देर किस बात की है। फटाफट हथियारों से निकल लो मित्रों।

हमने सबको कैदवा कर लिया।

दोहन जी अजुबों ने अपना काम खत्म कर लिया था।



और ये सब हमें तकली।



अबले पल सभी हैजी से बाहर की ओर भाग लिए।

कमिना बाहर खुलने की इच्छा थी।

जाते-जाते हम से  
तो मिलते जाओ  
नौ अजूबो!

आह! पुलिस!



फिर की कोई बदल  
नहीं। हमें पुलिस से  
भी निपटना आता  
है।

बूती के साथ-

पैलन के हथियारों के  
सामानों के हथियार कुछ भी  
नहीं हैं।

अब देखना रघुआ  
का कसाल।



धड़क



रघुआ के हाथ से निकलता वह तरल  
मदार्थ सड़क पर फैलता चला गया,  
जिस पर रघुआ रफेल की  
गालि से पुलिसकर्मियों से टकबाचा  
और उनका बेहोश बना दिया।



हाह!

धड़क

भड़क

परीक्षा की  
तबल के लवा  
मेरा यह  
हथियार।

हाह! कोई शुरू करे  
रघुआ की बचाओ!

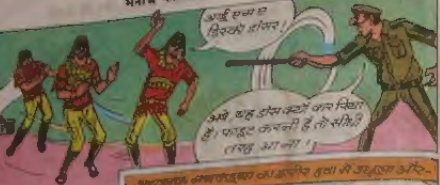
मजदूर की बगैरों की बदल कोई  
सहल नहीं कर पाएगा।

आह...है...है...





हमारे पास बमों का एक बड़ा भंडार है, जहाँ से हमें जहाँ चाहें वहाँ बम फेंक सकते हैं।



अब रुक जाओ  
विरुद्धी होकर!

अब यह डीस क्यों कर रहा है। फाट्ट करनी है तो सीधे तारु भागो।

साहब, बंद कर दो विरुद्धी डीस और फुटपाथ की साथ चल। वरना हमारा भी सड़ा हुआ है।



अब रुक जाओ  
विरुद्धी होकर!

अपना नाम बम फेंकने का डीस है तुम भी उड़ जाओ और...



आ डीस

अब पुलिस वाले का पैर तोड़ दिया। अब नहीं बंधेगा तु।

अब तारु फाट्ट करो।

धड़क

अभी बम फेंकने का बड़ा भंडार है, जहाँ से हमें जहाँ चाहें वहाँ बम फेंक सकते हैं।



अब रुक जाओ  
विरुद्धी होकर!

हमारे स्लीपिंग को बम फेंकने का बड़ा भंडार है, जहाँ से हमें जहाँ चाहें वहाँ बम फेंक सकते हैं।



हमारे बम फेंकने का बड़ा भंडार है, जहाँ से हमें जहाँ चाहें वहाँ बम फेंक सकते हैं।



!!!

कुछ ही पलों में जो अजुब ने पुलिस वालों को डेर कर दिया था।

हो कल सचो कर बलवान!

अब निकल पलो यही से।



अभी कैने ! अभी तो इन सबको कांजा कपना है मुझे ! बहुत दिन हो गए पुलिस वालों के सिर सूँडे।

अबाले पल ठहरोइ टकाला अपने बज-बाराइ काम में जुट गया।

हय ! धोड़ दे आलिस ! वरना मैं किसी को सूँह दिखाने आयाक नहीं रहूँगा।



अबाले काम करे ली अजुब अजुबो साहीनो साहू ली एक जमुवा थी जे बलवान चलो को रवाना हो करे।



हय ! अब से क्या सूँह लेकर घर जाऊँगा।

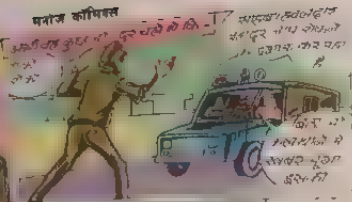
क्या बता भा, एक दिन खुजली वाला कुत्ता बनला पड़ेगा।



# परीज कापिलस

हो नो अचको के हल कोलने  
हो पुलिस को नो जणक चीलपनी।

उह ह ह कलकल  
उह नो नो नो नो नो नो



हवलदार को कोप से खिटा लिया गया।



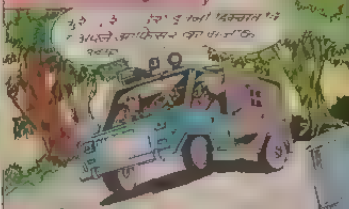
उसकी  
हवा नो नो नो नो नो नो

उह नो नो नो नो नो नो  
उह नो नो नो नो नो नो



# हवलदार बहादुर और नौ अबू

हुल्ला मचाने ही बुलबुलाने का काम आता है  
अब नौ अबू आ पहुँचा



माँ नौ अबू इन्हीं  
सकल तैयारी में थे कि  
बाद में नौ अबू











अबाले घाल-

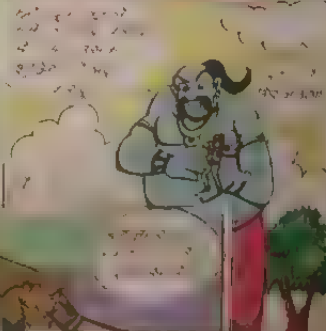
तू देना पसोड  
दुवा

लेकिन  
लुक्के की  
दुवा "जोखन"  
नहीं उतरे

भोला ! तूम तो वह आदमी नहीं  
तू, जिसे मैंने अपने बालक की दुवा  
"कट" था

तू व लुक्के की  
दुवा ही की दुवा  
नहीं उतरे

(तू व लुक्के की)

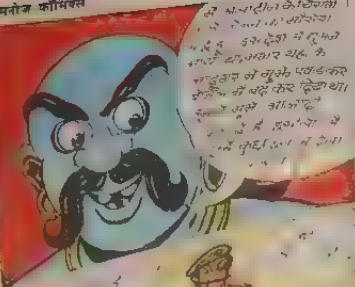




मनोज कामिबल  
अरे, मैं तुम्हें  
कैसे जाने दूँ?  
बोल्बो बम्बो  
बुलबुल बोल्बो

ह  
हैं न जाने  
हैं न जाने  
हैं न जाने  
हैं न जाने  
हैं न जाने

मे भोलाहीन के टोकरा।  
मे भोलाहीन के टोकरा।  
मे भोलाहीन के टोकरा।  
मे भोलाहीन के टोकरा।  
मे भोलाहीन के टोकरा।  
मे भोलाहीन के टोकरा।  
मे भोलाहीन के टोकरा।  
मे भोलाहीन के टोकरा।  
मे भोलाहीन के टोकरा।  
मे भोलाहीन के टोकरा।



अब मैं तेरा आका  
और तू मेरा  
बुलबुल।

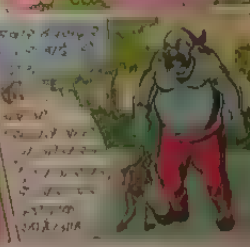
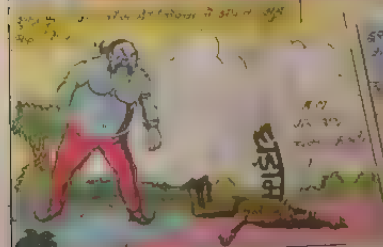
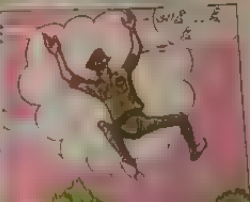


हवलदार बहादुर और नौ अक्के



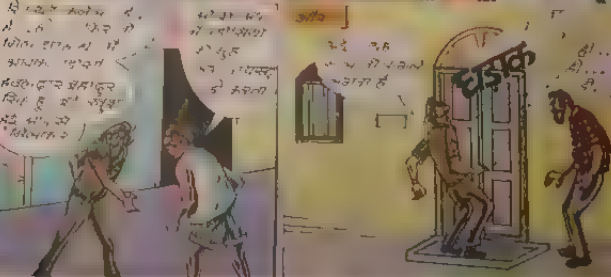
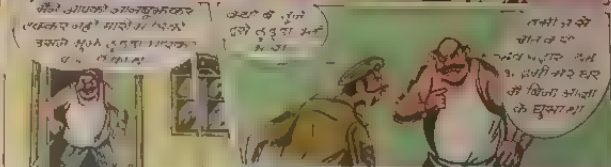
अब तो वे हवलदार  
उपजी अ न ३३  
निकलता था १३/१०

हवलदार भागा  
कि ३ ३ ३ ३  
३ ३ ३ ३ ३ ३





# हवसदार बहादुर और नौ अक्लें





पु. व. नारायण  
मंड. पु. , क. पु. पु. पु.  
ए. क. पु. पु. पु. पु.  
पु.

ਜਾਂ ਪ੍ਰਾਚੀਨ  
ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਪ੍ਰਾਚੀਨ  
ਜਾਂ

કુલ્ય ને શ્રી હરમંદર સમારૂપ અણે એક  
પાકિને ને ચામને રવડે છે. 15/1/19

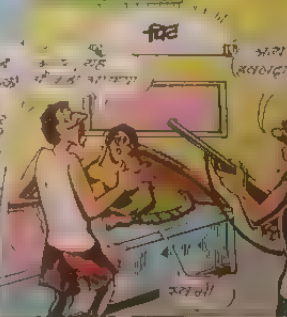
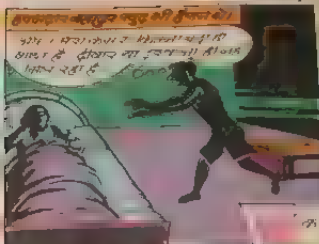


गाली १२५ अथवा १२६  
दूध १ १/२ से २ १/२ तक के बालक  
पर्याप्त है।

... १९५५ में अलग राज किया  
उत्तर प्रदेश - १९५६ में अलग  
राज किया गया था  
पश्चिम बंगाल को अलग राज  
मिलाना था

भारत 1981-82 अलगजालेमें  
१५ १०००, ५००, २००  
२५००, १००, ५०



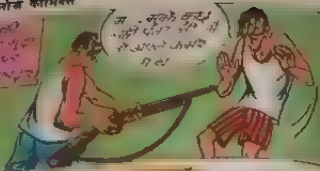


“हो, यह आदमी तो  
कमरे को जलेंदुक्त भरा,  
नगरी...”

“अपने पुछना  
हूँ आदमी को.”

कमरे को जलेंदुक्त  
भरा, नगरी...  
नगरी...

“अ. मुझे कुछ  
पुछना है...  
तो आदमी कमरे  
में है.”



“अ. मुझे कुछ  
पुछना है...  
तो आदमी कमरे  
में है.”



“अ. मुझे कुछ  
पुछना है...  
तो आदमी कमरे  
में है.”

“अ. मुझे कुछ  
पुछना है...  
तो आदमी कमरे  
में है.”

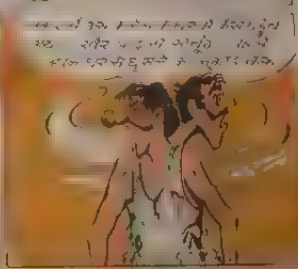
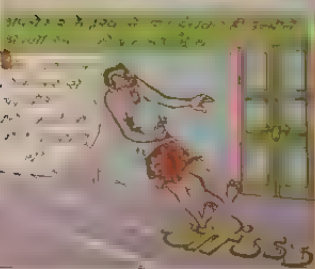


अ. मुझे कुछ  
पुछना है...

अ. मुझे कुछ  
पुछना है...



# हवलदार बहादुर और नौ अचूने



तभी बस्ती के प्रसिद्ध होते की  
जाकिन चौके

बस बस भयान  
हमारे जिक्र घर की  
मौल दुख रहा है

कौन-कौन  
है पता

जानकारी के लिए  
हमारे जिक्र घर की  
मौल दुख रहा है

जिनाम बस बस  
हमारे जिक्र घर की  
मौल दुख रहा है





अपना ही काम करने में कोई दिक्कत हलवाकर प्यार मिले।



जो शत्रु दोनो के बहादुर से दोनो बहादुरो को भगता बहादुर  
दुप [ (बहादुर) ] बहादुर



हद से जवान बहादुर १४ न ७० के  
हवलदारी के बासने पगुंछ १२०,



हवलदारी की अखबार पढ़ना का दोनो के हवा  
उस का ३६ ६ ३६ ३६  
कलकत्ता के नौ हवलदारी का  
जो १४ न ७०  
हद

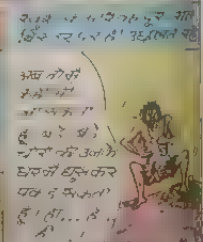
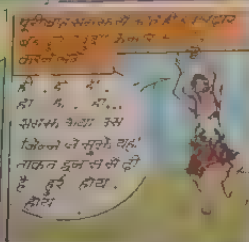


बाक कलकत्ता ३६ से जवान हवलदारी  
बहादुर ३६ ३६ ३६  
अह बहादुर  
३६ ३६ ३६ ३६ ३६ ३६  
३६ ३६ ३६ ३६ ३६ ३६



अह बहादुर ३६ ३६ ३६ ३६ ३६ ३६  
३६ ३६ ३६ ३६ ३६ ३६





# हवलदार बहादुर और नौ अरबों

अच्छी दिन पुलिस के बहादुर पर हिंसा का राज हुआ था।

पुलिस

जी ११ बूथों  
को बंद कर दिया  
इस्तीफा

अगर वो अ बूथों  
अच्छी न बंद कर  
करो तो यह  
अच्छे बजों का  
बाहर धर  
साहस

POLICE HEAD QUARTERS



नौ अरबों के शिकार ३ बूथों में बंद कर दिए गए हैं।

कोसलनगर आहूत के ऑफिस से—

जी ११ बूथों  
को बंद कर दिया  
अच्छे बजों का  
बाहर धर



अर अरक हवलदों  
ओ जवाबदारी की है,  
उससे पता चलता है



जी ११ बूथों के बंद  
करके का बंद कर दिया  
अच्छे बजों का



अच्छे बजों का  
अच्छे बजों का  
अच्छे बजों का  
अच्छे बजों का





ॐ नमो भगवते वासुदेवाय -

कुछ और बातें

जहाँ हमको जानना है, वहाँ हमको जानना है।

कह। किन्नात पाई है हवयदार  
बहादुर ने कण्ठस्थित  
मुष्टिकल से मुष्टिकल केस  
चुकिचों के हल कर लेता है। और  
हसी कनह से कसी बजर साहस की  
आंखों का तास बना हुआ है वह

कथं न जानते -

47 24

天賦

महाराष्ट्र राज्य सरकार  
मुंबई

100

बहादुर शाह की जन्म संकाय बहादुर  
क-७५ म संकाय नं० २४ वारा

दोस्तों को भेजें  
 शांति के लिए  
 शांति के लिए  
 शांति के लिए  
 शांति के लिए  
 शांति के लिए

आज मैंने १०० रुपये  
कलकत्ता की मुद्रा  
करीब ११

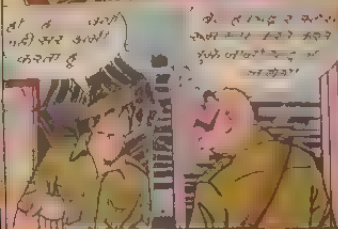
ઓ વૃ...

तारी- सर आशु 1 हवारा 2 कर्मभार  
 २२/१/२०१५ सार्वभौम से मुक्त हो  
 २२/१/२०१५ १ भूभार को जो सार  
 निरुक्त किया है।

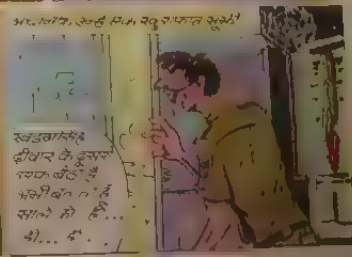
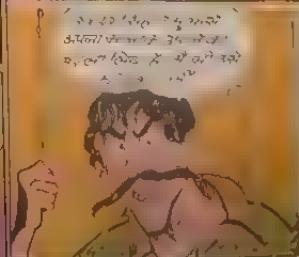
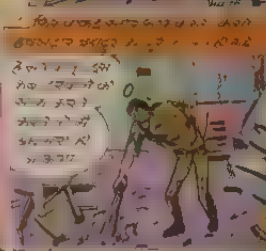


नौ नौ अङ्ग्रे)

हो! तुम्हीं आज ही इस कैदी पर लगेगा है। पर गाँव से बहुत दूर जेल तक पहुँचाने पड़ेगा।



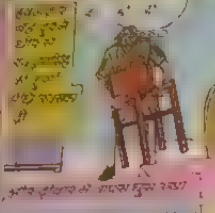
हवलदार को लेकर बड़गाँव वाले के स्लोव बस में पहुँचा। इस गाँव का हुकूम गाँववासी ही होता है फिर समझकर देखा।



जो बच्चा घर के बाहर खेलता है उसे पिता को पता चलेगा।  
 और उसे सजा मिलेगी।  
 मनोज को पता चलेगा।

मनोज का पिता उसे सजा देगा।  
 और उसे पता चलेगा।

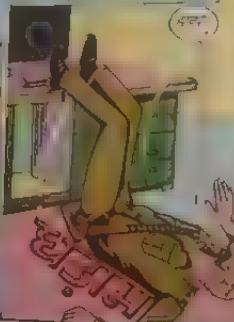
मनोज का पिता उसे सजा देगा।  
 और उसे पता चलेगा।  
 और उसे पता चलेगा।  
 और उसे पता चलेगा।



मनोज का पिता उसे सजा देगा।

मनोज का पिता उसे सजा देगा।

मनोज का पिता उसे सजा देगा।



धड़ाम

मनोज का पिता उसे सजा देगा।

(9.6.75)

महार सर, मैंने  
हमका सुना था कहीं  
आप सोने के कुन्नों से  
बुद्धक तो नहीं काप थे?

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
श्री गणेशाय नमः

हो हो हो ! मेरे  
मरने फुटने की वजह से  
आ जाता हूँ। हा... हा  
हा... !

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
॥ १ ॥

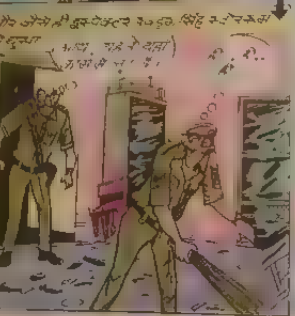
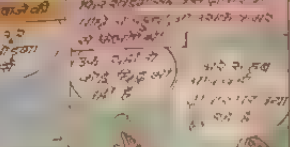
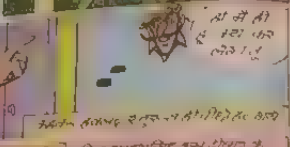
2.  
 2.  
 2.

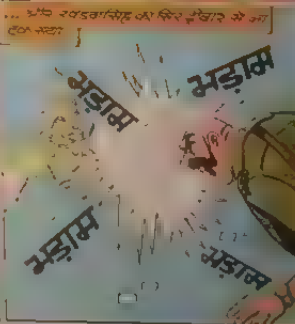
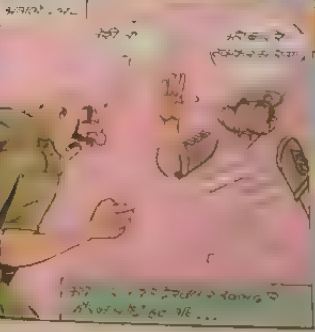
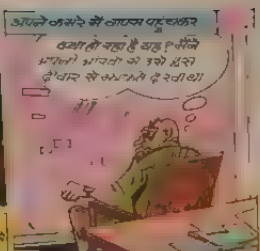
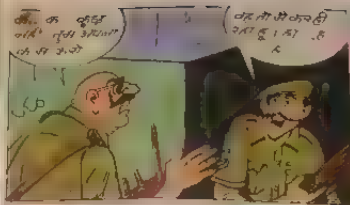
7  
[अमली ओईनाहा  
है फेर सारा  
छि सने था]

बड़ाक ↓

मनोरंजन के लिए

धाड़





एक बार एक दिन मैंने भी एक बच्चे को  
 देखा था जो एक बच्चे को धक्का मार रहा था।



एक बार एक दिन मैंने भी एक बच्चे को  
 देखा था जो एक बच्चे को धक्का मार रहा था।

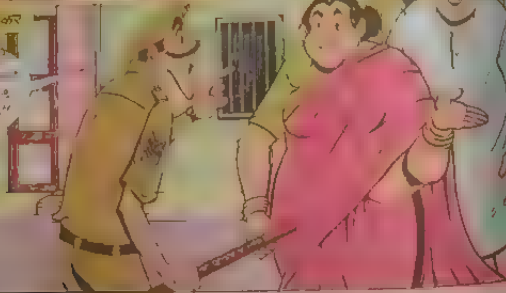


एक बार एक दिन मैंने भी एक बच्चे को  
 देखा था जो एक बच्चे को धक्का मार रहा था।



एक बार एक दिन मैंने भी एक बच्चे को  
 देखा था जो एक बच्चे को धक्का मार रहा था।

एक बार एक दिन मैंने भी एक बच्चे को  
 देखा था जो एक बच्चे को धक्का मार रहा था।





# हवनहार महादुर और के बहने

आज तुम जाकर बहने को  
महोदुर से पूछना कि वह मेरा क्या  
काम है। मैं तो भी जाऊँगी।  
महोदुर को मैं भेद दूँगी।  
तुमहार से कहूँ मैं।

हवनहार का बहने है।  
मैं जाऊँगी। मैं भी जाऊँगी।  
महोदुर से मैं पूछूँगी।  
मैं भी जाऊँगी। मैं भी जाऊँगी।  
मैं भी जाऊँगी। मैं भी जाऊँगी।



महोदुर से पूछना कि वह मेरा क्या  
काम है। मैं तो भी जाऊँगी।  
महोदुर को मैं भेद दूँगी।  
तुमहार से कहूँ मैं।

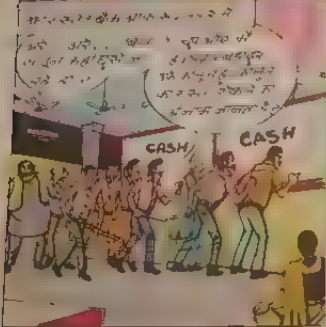
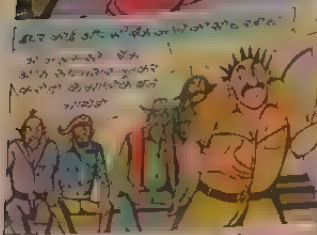
महोदुर से पूछना कि वह मेरा क्या  
काम है। मैं तो भी जाऊँगी।  
महोदुर को मैं भेद दूँगी।  
तुमहार से कहूँ मैं।



महोदुर से पूछना कि वह मेरा क्या  
काम है। मैं तो भी जाऊँगी।  
महोदुर को मैं भेद दूँगी।  
तुमहार से कहूँ मैं।

महोदुर से पूछना कि वह मेरा क्या  
काम है। मैं तो भी जाऊँगी।  
महोदुर को मैं भेद दूँगी।  
तुमहार से कहूँ मैं।







# मनोद कथिपन

मनोद को मारना  
मनोद को मारना  
मनोद को मारना

मनोद को मारना  
मनोद को मारना  
मनोद को मारना

मनोद को मारना  
मनोद को मारना  
मनोद को मारना

मनोद को मारना  
मनोद को मारना  
मनोद को मारना



मनोद को मारना  
मनोद को मारना  
मनोद को मारना

मनोद को मारना  
मनोद को मारना  
मनोद को मारना



मोहरी की-



अब करवाइया क्यों  
गात रहे हो मुझे! हाहा!



मनोज  
तब तो मैंने किज  
लगे की बात करके  
मुझे डर था

मनोज  
तब तो मैंने किज  
लगे की बात करके  
मुझे डर था

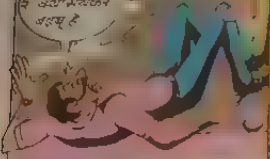


ले मनो हुक्मदार के साथ पलु गया  
एक देर के...

मनोज उनके साथ-साथ नहीं रहा

कतलु मेरे को  
की बिल्कुली तरह  
मनोज

कतलु मेरे को  
की बिल्कुली तरह  
मनोज



आह!





मनोज काविवर

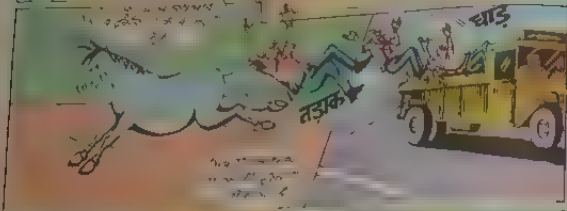
घाड़क

अरे इस  
बड़े से पंखा  
मिया जल,



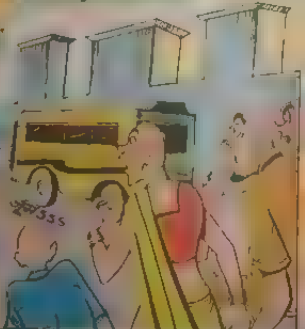
घाड़

तड़ाक



हम सबको एक साथ...  
आप सबको बुझा दोल आदर

मना'क घर १०० २ गीर भावनी ३ सुखी काडी  
४ लहलहा ५ जिकरी



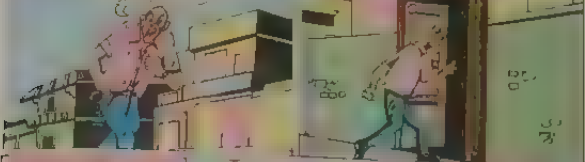
# हवलदार बहादुर और नौ अंगूठे

हवलदार बहादुर बख्श

कित-कितानी गले अपने घर लुंछे-

बहु भाषी न भुके  
भी लाला बजा देता  
अब लसप-क भी को कटा  
मैंने देखा देता

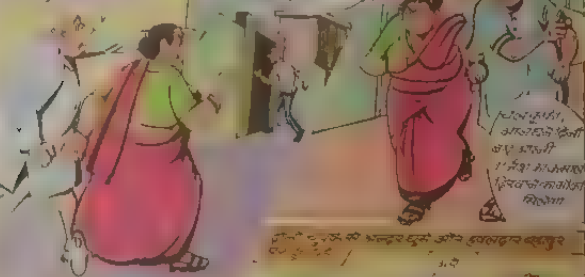
हवलदार और  
5-6 भा 3 अंगूठे



हवलदार बहादुर बख्श

हवलदार बहादुर बख्श  
हवलदार बहादुर बख्श  
हवलदार बहादुर बख्श  
हवलदार बहादुर बख्श

हवलदार बहादुर बख्श  
हवलदार बहादुर बख्श  
हवलदार बहादुर बख्श  
हवलदार बहादुर बख्श



हवलदार और  
हवलदार और  
हवलदार और  
हवलदार और

हवलदार और  
हवलदार और  
हवलदार और  
हवलदार और



चम्पाकली भी अपनी सैडल उतारकर रिल पड़ी  
हवल्दार बहादुर पर।



सिंहजिआ का खरब दिहा  
हवल्दार बहादुर को और  
परिणाम स्वरूप...

बैठ  
किर भादवा  
मेरे घर में ?

बाजी रेल पर पड़ते से डिरो की बाखिया ने...



और उसने हवल्दार बहादुर को दूर  
कक देया। (हण्ड के कला  
जो दूरो दूर। सी लैने)

... कि बीकनो की तरह कपटी चम्पाकली उन पर।

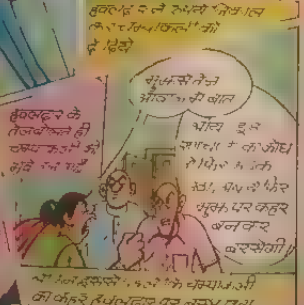
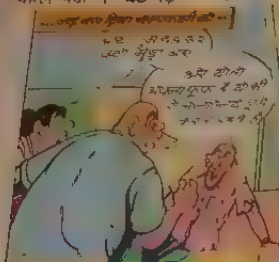
कोरे लतने जेकोट,  
झोड़वा चहि तुमके  
बोलने

कक जा चम्पाकली,  
य में हूँ।



अभी वह उसी-सी गये...

हवल्दार की चोरघर...



...जिसे मैं अब बड़ा दुःख

...मुझे कुछ भी नहीं समझता  
...मनाज का ऐसा कहना  
...मैंने सोचा कि मैं  
...उसके साथ ही रहूँगा

...अपना नाम स्वयंकार  
...मुझको अंतर नहीं है कि मैं  
...तुम्हारे साथ ही रहूँगा

...शेक है

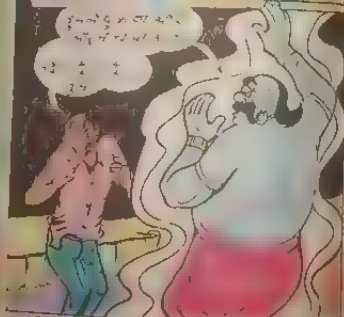
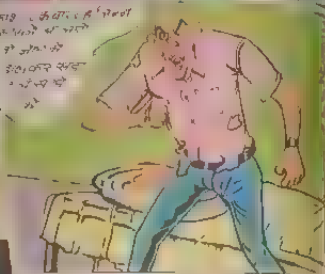


...मनाज का नाम और...



...सारी मुराबा...  
...अनुलो के कारण हुई है  
...कार जिन्ना हीकार  
...पार करने की  
...बलाश काय  
...अच्छी सी बातें  
...देकर जाना तो  
...मना चला देना  
...उना अनुलो  
...को

...का नाम स्वयंकार  
...मुझको अंतर नहीं है कि मैं  
...तुम्हारे साथ ही रहूँगा

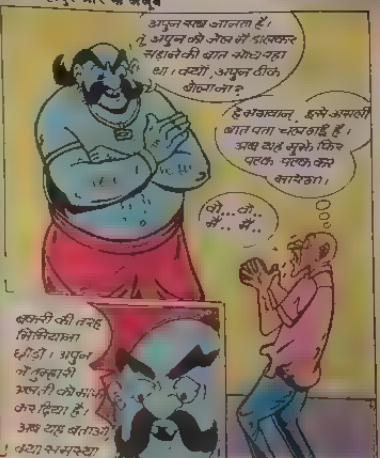




बच्चों, अपुन को कैसे बांध किया आइसी ?

अगर इसे सच्ची बात बता दी तो मेरा मर-मारकर भुली बना देगा।

व...वो... मैं सोच रहा था कि अगर तुम सिला जाओ तो तुम्हें भी अचकचदार करके

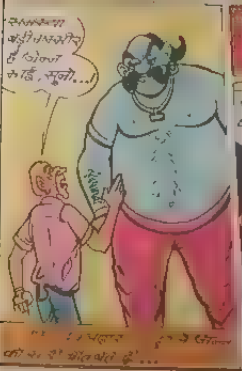


अपुन बांध जाना है। तु अपुन को जेल में डालकर सहाजे की बात मोच रहा था। वयों, अपुन ठीक बीछा जा ?

हे भगवान्, इसे असली बात पता चल गई है। अब यह मुझे फिर पटक पटक कर मारेगा।

वो...वो... मैं...मैं...

बसती की तरह मिलियाला धड़ी। अपुन ने तुम्हारी भयानी को माया कर दिया है। अब यह बताओ, क्या समझता है तुम्हारे



समझता बड़ी भयानी है जो पता रुई, सुनो...

...और बोला। मैं यह हाल देख रिटो हो ये साले उन्हीं नों भंग रहे हैं भगवान् हैं



अब तो आइसी आखिर रहन बाखी के मूर्ख। अपुन ने तेरे को जो बांधित ही थी अगर तूम उसका सही उपयोग करने तो वेनी अजबू आओ खाले रिटो हो जाते...



सादी तपकीब बुलने के बाद -



उह जेला भाई वाह तुमने तो कबाल कर दिया

तो फिर पतुछो ओर नाकर के बाडा के के का ।

इस समय वे लो अजुबी जोहरी बाजार की तरफ बढ़ रहे हैं। बाजार वहा की सादी दुकाने खुलने का इरादा है



जो लज्जा के गीहरी बाजार में खुलने की पहल्वी हो मुझे कुछ जरूरी चीजों की इंतजाम करने के लिए बाजार जाना है



बाजार में जाया ।



उहें धुपे हुए बाज को अपने मुँह में डालता है, उसे लो अजुबी की बाकिर को पर कैसे लहसु के रसी है।

अब जिल्ला भाई ने बसारीन कर फट

किर जिल्ला बसारीन बसारीन लो लो अजुबी के बसारीन की लज्जा के बसारीन लो ।



लेकिन लहसु में उहें दुहें कैसे के लो लो लो लो

ये लो अजुबी बसारीन है लो लो...



तुम वहा दुपहर उहें घर

जिल्ला लो लो जिल्ला बाजार हो बाजार ।

कुछ ही पलों में वह इतना दूर हो गया कि उसे  
उस के काल्पनिक जीवन में भी नहीं था।

उन्होंने निपटने की चीजें मुझे  
यहां भिजा जा रही हैं।



मिटर अपनी  
अवस्था का  
सामान  
इस तरह  
अवस्था के  
बाद -

मि... मि... मि...  
मैं इतिहास अपना  
बाद आज अपनी कि  
बाद पत्रों में आया  
है। अब खबर नहीं  
उन नौ अंशों  
की।



अब अगर तुम  
अपनी किसी किसी  
नयी करवाना चाहते  
तो चुनकर नहीं  
करेंगे कृपया।

अब कल्पना (कल्पना)  
कल्पना कि, कल्पना (कल्पना)  
कल्पना में भावों के स्वर  
नी चले जायें।

हजार जोहरी बाजार में नौ अंशों अपना छावा  
कोल  
मुझे।

साहबों, हमें  
नौ अंशों के बारे  
में। हमने इस  
अंतर में बहुत  
बड़े और बड़े  
एक ही और  
छोटे तर  
गोप्य कर  
दिया है।



वैसे भाविका का हृदय  
तुम्हें कुछ करने लायक  
ही नहीं छोड़ेगा।

भाविका के हृदय से हवा में उड़ चुकी है वह... 69...

हैं। तब तक तो बहुत कम ही लोग नौकरी छोड़  
कर भागते हैं।

हय! कोई  
लेरी पीठ  
खुजाओ

हे साधन  
वो खुजली तो कैसे  
जाननेकर रहेगा!

मैं खुजली से परेशान हूँ। तुम  
लोगों को रोजा कराना है। तुम  
यह अपना काम करो।

नहीं अजुबे  
अपना-  
अपना  
काम  
करने से  
जुदा गये।

कनाक

आज तब पूरा  
बाजार लूट  
कर ले  
जाएंगे।

आज तब पूरा बाजार  
लूट कर ले जा  
रहे हैं।

तब तोड़ के लिए  
कोई भी नौकरी छोड़ना  
बच्चों का खेल है।

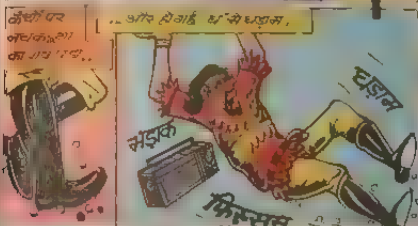
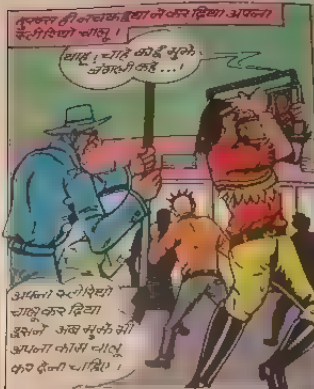
कनाक

आपहुँचा!

हवलदार  
बहादुर

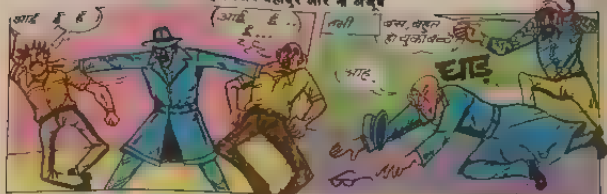
हैं। ये सब कुछ  
आज देखेंगे कि कितनी  
जायता है तुम?

अभी तो अजुबे अपने  
कामों से मीठा मने थे कि वहाँ..





# हवलदार बहादुर और नौ मजदूर



क्या है उस पुरानी जूतों की बगल में कंकड़  
मलने का तरीका और बेहोशा हो जाना ?  
( हा हा हा...  
बेहोशा हो गया  
बैचाना ! )



अरे उठर जा  
भावा ग कहो है...  
( कपड़े हैं... )



जीकेस हवलदार फिर  
दीवार से सजावाए  
... मार फाला  
आलेस  
धड़

उसे बेहोशा करके बड़ी शान से  
दीवार से बाहर निकले  
हवलदार बेहोशुर !  
हा... हा... जमरावाड़ से पैदा  
होने वाले थे

आर पेल्लके  
सिर... म... म... म...  
जो उसे बेहोशा कर गया,

अजमी सफाई पर अंकड़ते हुए वह कहाँ-या  
के पीछे लुपते

आधा  
धुंधल!

(क पकने देंगे)

अब, हम हैं हवलदार  
बहादुर उर्फ दुपिदलन  
जैन्सबाद

अब जैन्सबाद के घरों,  
यह भी हैं सरोइना धुंधल  
और खुजाले की  
हैयारी की

लेकिन

इससे पहले कि  
पाउडर हवलदार  
बहादुर के शरीर पर गिरता, वह  
अपने अच्छे कोट की गैस में एक पैसा  
बिफलकर तेजी से उसे कटाने लगे।

उ खुजाले  
साहे!

अधुनारे आभा  
हिला हाथ हिला  
खुजाले के

लेकिन कहाँ-या की बात अधूरी रह गई क्योंकि  
पगले की हवा से पाउडर उड़कर उस पर जा पड़ा था

कुछ ही पलों में कहाँ-या पावालों की भाँति अपने  
जिस्म की नीच रहा था।

आह,  
खुजाले!

हाथ  
खुजाले!

आह  
खुजाले!

ही... ही...  
ही... जैन्सबाद  
में टंकाले का हाँही  
अंजाम होता है।



काली जलाने का विचार निकलू

अपना बालू की ओर बढ़ू, विष्णू की पकड़ की आँख नहीं धूरेगा हू

उस बुढ़ी, लम्बे अंगुलि सिखा हलाने की मुक्ति



जिसने विष्णू की धरती भूँसा है



धिक्के काहे । कल्ला सुवाला नो बल्ल कल्ले, आहा दूरा नुको



नो उल्ले की छे हवा की बल्ल कल्ले, एकर बुआ कल्ले

धो कल्ला कल्ले, कल्ला हार कल्ले, ही धोडिआ

मैंने ही २५, ३० नो बल्ल कल्ले कल्ले के बल्ल कल्ले, २५, ३० नो बल्ल कल्ले, २५, ३० नो बल्ल कल्ले, २५, ३० नो बल्ल कल्ले



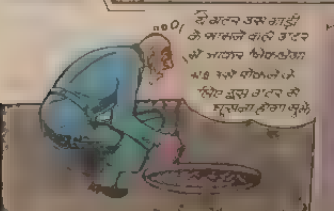
धाड़

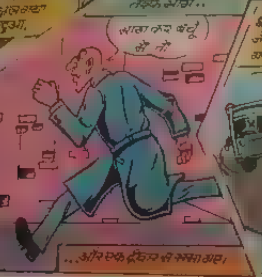
आले साधियों का हाल हैल अल्ले २५, ३० नो बल्ल कल्ले, २५, ३० नो बल्ल कल्ले, २५, ३० नो बल्ल कल्ले

सबक कल्ला हार होवला अल्ले काठालो गुरु



२५, ३० नो बल्ल कल्ले, २५, ३० नो बल्ल कल्ले





# भड़ाक

...आगे -

आह!

हे... हे... हे...!  
बड़े आगे थे हवलदार  
बहादुर ही बोट से टकराये

नीं अजूबों का आखिरी  
अजूबा भी अब टूट हो चुका था।

तभी वहाँ पुलिस आपहुँची, जिसे लोहों ने फोन करके वहाँ बुलाया था।

वाह हवलदार, वाह!  
तुमने नीं अजूबों को  
हथपायी कार के बल  
साधित कर दिया है कि  
तुम नामों की नहीं,  
फास के भी बहादुर हो।  
हम तुम्हारे लिए तबड़े  
इनाम की सिफारिश  
करेंगे।

धन्यवाद सर!

लेकिन तुमने ये  
सब किया कैसे?

ये एक ऐसा भयंकर राज  
है इसोक्टर साहब जिसे  
जान लोखो तो सिर पर उठा  
आये दो-चार बाल भी  
फिर से उड़ जायेगे...

!!!

इसलिए ये राज  
राज ही रहे तो  
अच्छा है।

अब चलो ? यह रास्ता  
चम्पाक की वर सुनाओ।  
बहुत यमुना होनी वह  
यह सुनकर।



मिन्ना!

मिन्ना पूजापात्र धकत हुआ-

क्यों के आदमी,  
अपना ही लक्ष्योक्त  
और शक्ति काम  
कर आई ना?

मिन्ना  
जिन्ना भाई,  
कामचुच लगी  
शक्ति कागार  
ही है।



अब मिन्ना पावले के लिए मैं  
पुनः पुनः कुछ कर रहा हूँ और  
बहुत ही नया कुछ दे रहा हूँ।



आप!  
पुनः कुछ  
ले रहे हैं  
और नया  
कुछ दे रहे  
हैं, कब  
आएंगे?

ये मैं  
नहीं  
चलाऊंगा।  
तुम्हें अपने  
आप ही पता  
चल जायेगा।  
ही... ही... ही!

और स्वयंभूत कुछ कह पाता  
उससे पहले ही-



और मिन्ना जिन्ना वहाँ से भाग  
ही गया।



मिन्ना ये पुराना क्या  
ले गया और नया क्या  
दे गया।

मिन्ना जाकर  
सिर घटवने के बाद भी पताचन  
न पाये स्वयंभूत बहुत दूर।

माता वह किन्ना भी  
 दयालुस दिखावा कर  
 हैं। हर काम पहले सोचों  
 से करता है। रातों  
 अब तो घर पहुँचें।  
 देर-सवेर मुझे उसकी  
 पहली का मतलब  
 पता चल ही जायेगा।

...कि घर पर  
 एक नब्बो  
 हुआमा उनका  
 ईतजार कर  
 रहा था -

अच कह रहा है तु?

एकदम रोकाई अब  
 फूटी, मुझे कबल  
 पूरे घर सिंह ने बहुत  
 बताया कि पूरा जी  
 रात ऊपर की पक्की के  
 बेडरूम में घुस  
 लड़े थे।

लेकिन घर की तरफ  
 बढ़ते हल्लादार बंदूक  
 बाल नहीं जलते थे...

पराई पक्की के  
 बेडरूम में!

हूँ... मुझे...  
 जाने दो उन्हें।  
 आज उन्हें भार-  
 शायकर और नी  
 बना दिया तो  
 कहला।

जब हल्लादार  
 बंदा घर  
 पहुँचे तो उन्हें  
 देखा ही उस  
 घर बरस  
 पड़ी धन्याकली-

क्यों जी, कल रात पक्की की  
 पक्की के बेडरूम में क्यों घुसे थे।

पल मत से ही सब  
 समझ आये  
 हल्लादार बंदा।

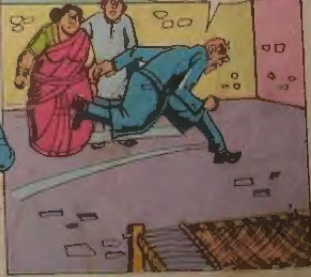
किर साही बात बच पाकली को  
 फार बोले -

हां, अभी  
 शिरपला हूँ मैं  
 तुम्हें दीवार  
 के पार जाकर

अब तो पल अपना फिर आगे किते दौड़ पड़े  
 हल्लादार बंदा दीवार की तरफ -

देखना, किस तरह  
 दीवार की चीरकर दूसरी  
 तरफ जाया हूँ मैं।

मनु बका गिरो  
 घर पार करके  
 को बेडरूम में  
 चला था।  
 ओह! तो  
 दीवार के  
 आर-पार  
 होने की  
 शक्ति है तुम  
 में।





लेकिन—



हाउ सर बाबा!

क्यों, तुम्हारे पास तो दीवार के आसपास होने की शक्ति थी ना? कहाँ गई वह शक्ति?

वो... वो चम्पाकली... बात थल है कि, जिस जिल्ल ने मुझे वह शक्ति दी थी, उसने मुझसे वह शक्ति गपस ले ली!



लेकिन चम्पाकली कुछ कर पाती, इससे पहले ही सिर घेर सरखकर ससपटें भाग लियो थे हवलदार बहादुर।

एक ओर भूठ! कोई बस नहीं पला तो जिल्ल की कहानी बढ ली। बुर... बुर...

...अब चम्पाकली थोड़ोनी नहीं तुम्हें। बुर... बुर...



कहीं भी भाग लो, पीछा नहीं थोड़ोनी मैं!

अब ससपटें में आई उस जिल्ल की पहली। क



...अपनी भुलानी शक्ति लें बाबा हैं और नई शक्ति बाबा हैं।

सकत उसकी नई शक्ति ही होगी क्या?



पिया पाठको!

हवलदार बहादुर को दी गई जिल्ल की नई शक्ति क्या होगी और वह क्या-क्या भुल सिखायेगी, ये तो अभी हम भी नहीं जानते। इसके लिए हमारी तरफ आपको भी हवलदार बहादुर का आवाजी प्रकाशित अंक देखना होगा, जिसका नाम है— हवलदार बहादुर और

**साठ लाख का बकरा**